रामायण सुमिरन

जो सुमिरत सीधी होइ, गन नायक करिवर बदन ...
करो अनुग्रह सोई , बुद्धि राज सब गन सदन ...

मूक होइ वचल , पंगु चडीह गिरिबर गहन ...
जसु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल काली मॉल दहन ...

नील सरोरुह श्याम , तरुण अरुण बरिज नयन ....
कर ऊ सो मां ओर धाम , सदा छीर सागर सायं ...

कुन्द इंदु सम देह, उमा रमन करना अयन ...
जाहि दीन पर नेह , कर ऊ कृपा मर्दन मयान ...

बंदउ गुरु पद कंज , कृपा सिंधु नर रूप हरी ...
महा मोह तम पुंज , जासु वचन रविकर निकर ...

प्रणवउ पवनकुमार , खल वन पावक ज्ञानघन ...
जासु ह्रदय आगार , बसही राम सर चाप धर ...

Doha

विबुध विप्रा बुध गुरु चरण, बंदी कहु कर जोरि
होय प्रसन पुर वहु सक्ला, मंजू मनोरथ मोरी

घिर अर्थ जल बीचि समां, कहियत भिन्न न भिन्न
वन्दौ सीता राम पदा, जिनहि परम प्रिये कहीं

यही समय सुमिरन करू, सुनहु वीर हनुमान

आएके आसान लीजिए, सिया सहित भगवान्

समुद्र सुगन्धित सुमन लय, सुमन सुभक्ति सुधार

पुष्पांजलि अर्पण करू, देव करो स्वीकार

सिया वर राम चन्द्र की जय!